Report

Geographical Survey of Kolsiya

IN PARTIAL FULFILMENT OF THE REQUIREMENT FOR THE AWARD OF MASTERS DEGREE IN GEOGRAPHY

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

SETH G.B. PODAR COLLEGE

NAWALGARH (RAJASTHAN)

PANDIT DEENDAYAL UPADHYAYA SHEKHAWATI UNIVERSITY, SIKAR

SUBMITTED BY

NIKHIL KUMAR SONI

M.A./M.Sc. PREVIOUS

SESSION: 2021-22

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

SETH G.B. PODAR COLLEGE, NAWALGARH

CERTIFICATE OF COMPLETION

GEOGRAPHICAL SURVEY

In Partial Fulfillment of The Requirement For The Award of Masters Degree In Geography (M.A/M.Sc.)

Presented To

Nikhil Kumar Soni

For Completing Geographical Survey of

Kolsiya

Prof. Shantilal Joshi
Head of Department

Dr. Satyendra Singh
Principal

सेठ ज्ञानीराम बंशीधर पोदार महाविद्यालय

नवलगढ़

सत्र - 2021-22

पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय

सीकर

भौगोलिक क्षेत्रीय अध्ययन रिपोर्ट

निर्देशक
दीपक कुमार
भूगोल विभागाध्यक्ष

सर्वेक्षणकर्त्ता
नाम : निखिल सोनी
एम.ए. /एम. एस. सी. प्रिवियस (भूगोल)

विषय– सूची

1.	परिचय
2.	भोगोलिक स्थिति
3.	भौतिक स्वरूप
3.	अपवाह तंत्र
4.	जलवायु
5.	सिंचाई के साधन
6.	मिट्टी
7.	प्राकृतिक वनस्पति
8.	खनिज सम्पदा
9.	जनसंख्या
10.	अधिवास
11.	स्वास्थय सुविधाएं
12.	शिक्षा का स्तर
13.	कृषि
14.	प्रमुख मेले व त्यौहार
15.	प्रमुख तीर्थ व पर्यटन स्थल
16.	उद्योग धन्धे
17.	पशु सम्पदा
18.	संचार व मनोरजन के साधन
19.	परिवहन के साधन
20.	ग्रामिण विकास की नवीन योजनाएं
21.	गॉव की समस्याएं
22.	गॉव के विकास हेतू सुझाव
23.	निष्कर्ष

GUIDE MAP OF DUNDLOD

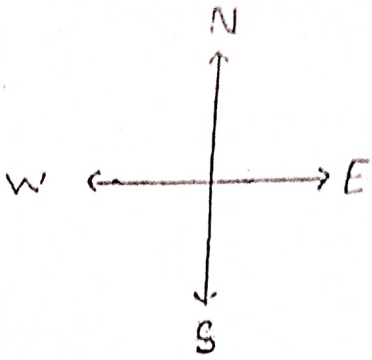

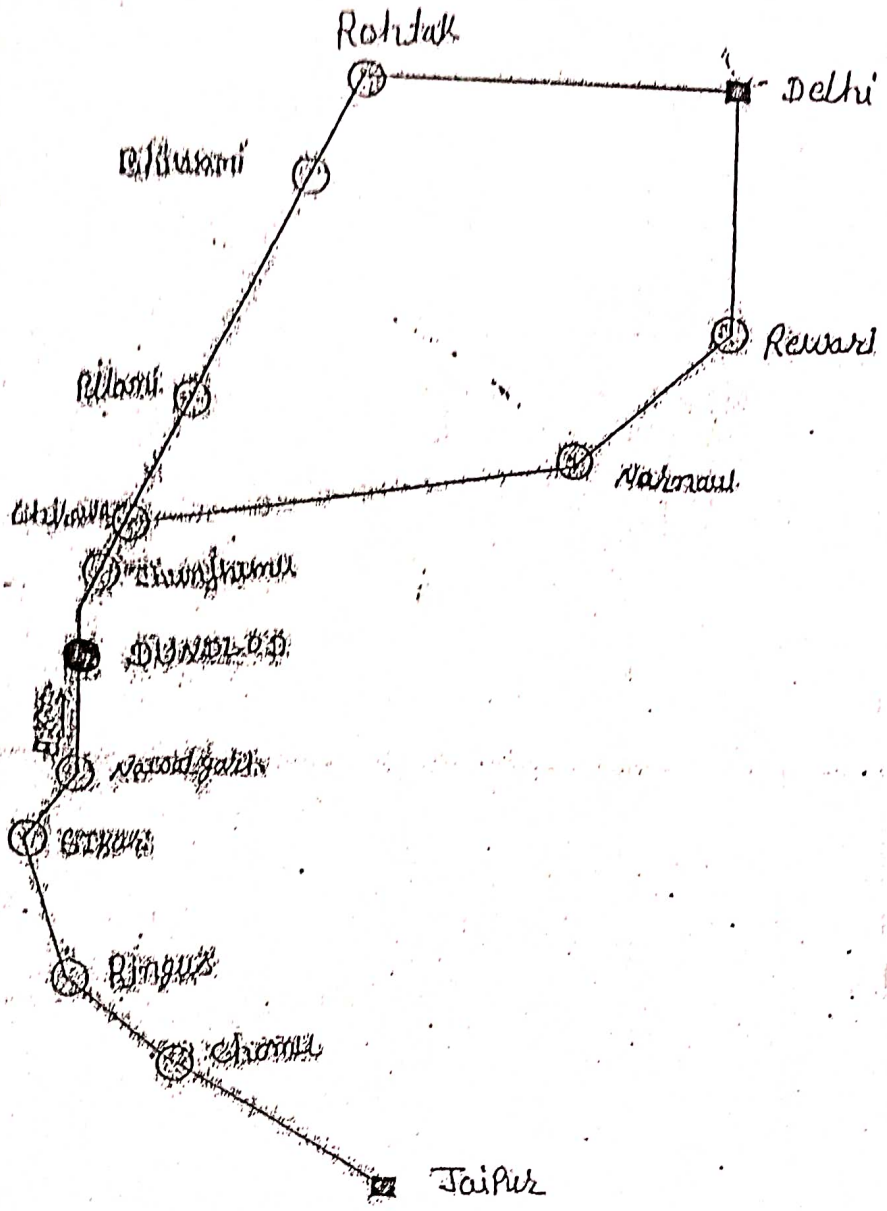

LOCATION MAP OF DUNDLODE

फरवरी तथा मार्च माह के तापमान का दैनिक हिसाब से निरूपण निम्न तालिका में दिया गया है।

फरवरी माह के दिन	24	25	26	27	28	29
न्यूनतम तापमान(°C)	12°C	16 °C	17 °C	18 °C	17 °C	17 °C
टधिकतम तापमान(°C)	21 °C	31 °C	32 °C	32 °C	32 °C	32 °C

उपरोक्त आकड़ो का ग्राफ द्वारा प्रदर्शन निम्न से किया जा सकता है।

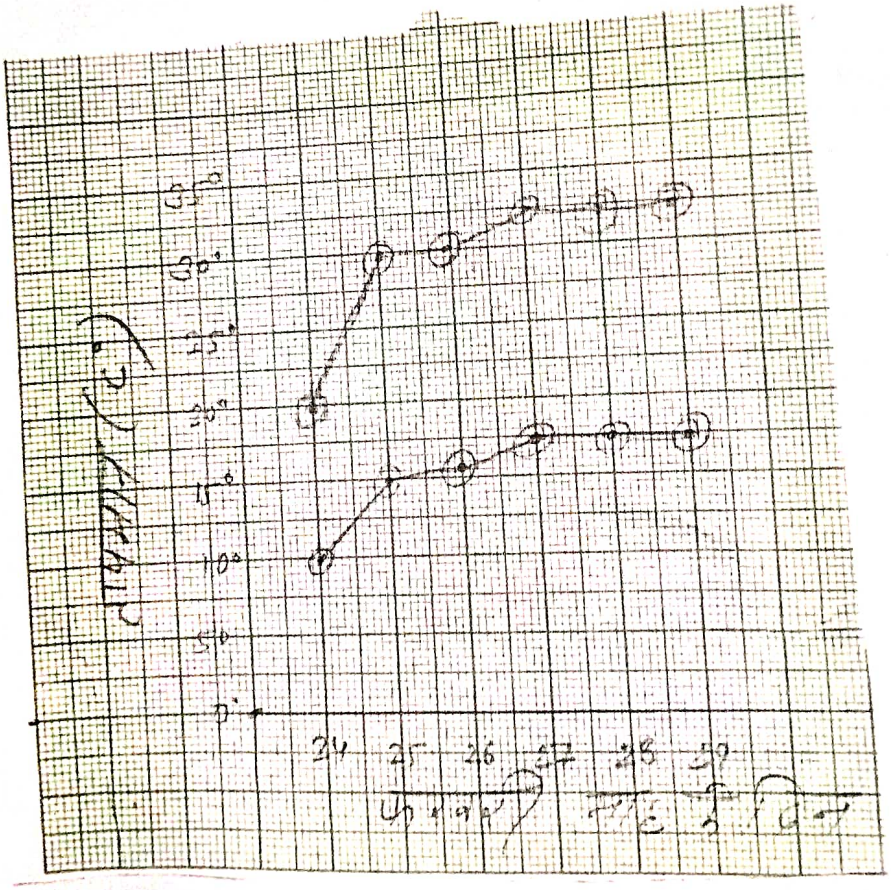

तलिका संख्या – 2

क्र.सं.	गॉव	कुए	नलकूप	हैण्डपम्प	कुल योग
1	**बाय**	77	23	4	104
2	**बिरोल**	32	18	6	56
3	**कोलसिया**	22	5	7	34
	कुल	131	46	17	194

उपरोक्त आंकड़ो की सहायता से मिश्रित रेखाचित्र द्वारा इनका निरूपण किया जा सकता है:–

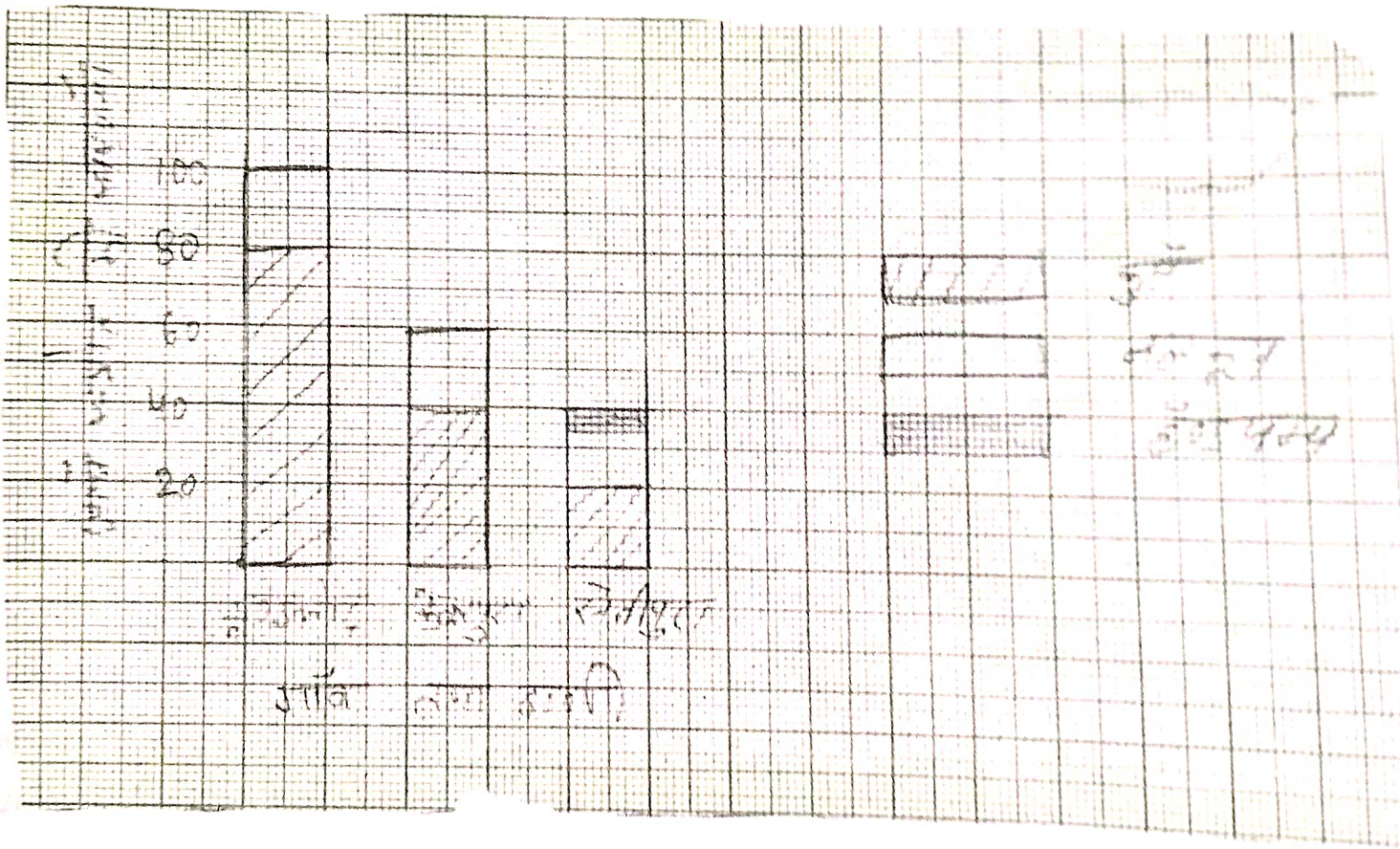

जनसंख्या :–

बाय गॉव में संघन जनसंख्या का जमाव पाया जाता है आबादी क्षेत्र में जनसंख्या वितरण अधिक तथा बाहरी भागों में (खेतों में) जनसंख्या का वितरण कम है यहां की कुल जनसंख्या 10310 है जिनमें से एस.सी के लोग 1173 एस.टी के 195 तथा अन्य लोगो की संख्या 8942 है। इस गॉव में पाई जाने वाली जनसंख्या का वितरण निम्न तालिका में दिया जा रहा है :–

तलिका संख्या 3

क्र.सं.	गॉव का नाम	S.C	S.T	अन्य लोग	कुल जनसंख्या
1	**बाय**	1157	195	7876	9228
2	**बिरोल**	–	–	326	326
3	**कोलसिया**	16	–	740	757
	योग	1173	195	8942	10310

उपरोक्त जनसंख्या के आंकड़े को मिश्रित दण्ड आरेख द्वारा दर्शाया जा सकता है।

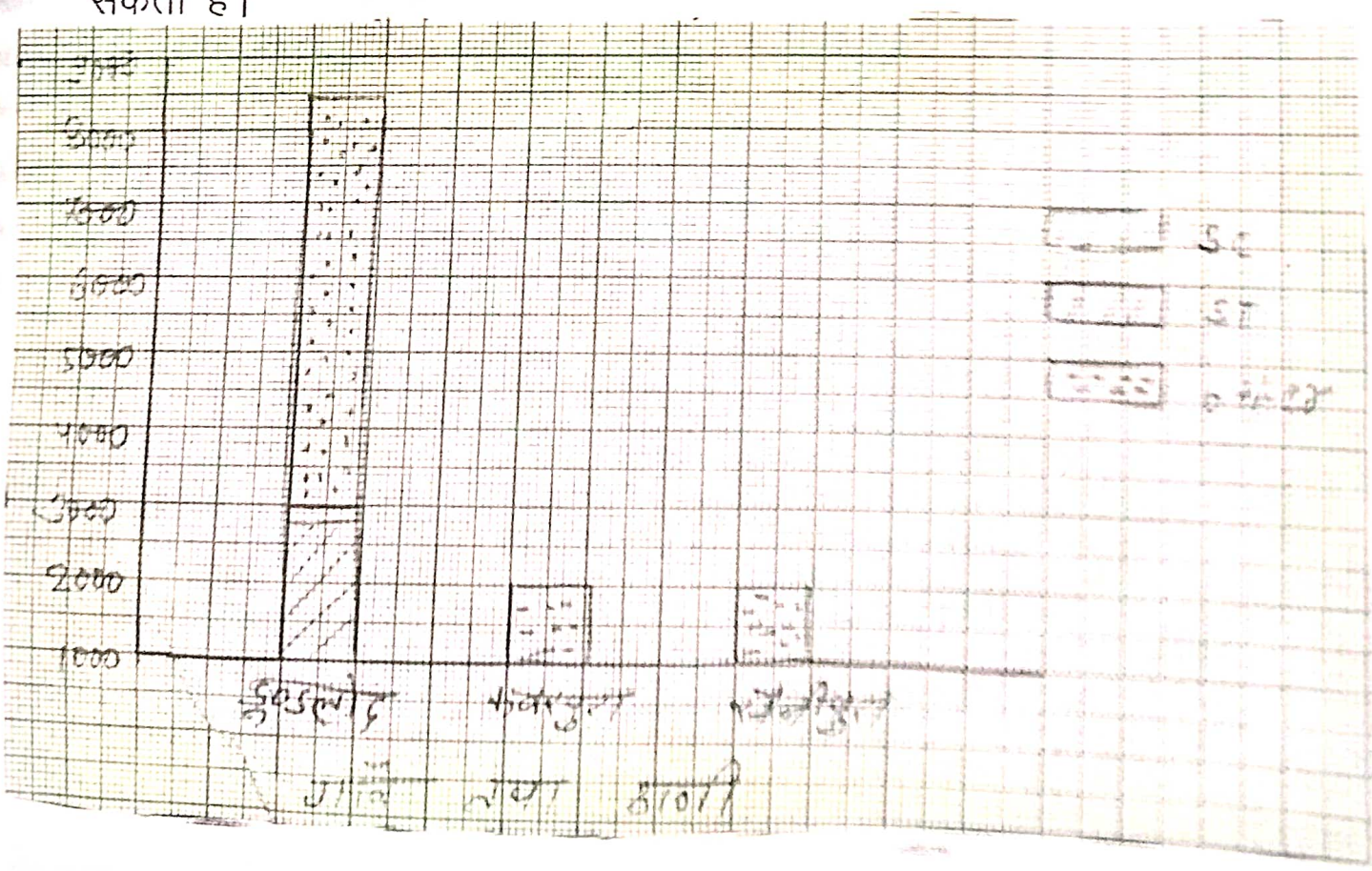

अधिवासः–

बाय गाँव में अधिवासों का प्रमिरूप चौक पट्टीनुमा है इसके साथ–साथ कुछ घर तीरनुमा प्रतिरूप का मिक्षित प्रतिरूप में भी बसे हुए है। बाय बस स्टैण्ड से बाय गढ़ तक सीधा मार्ग है तथा इस मार्ग के दोनों किनारों पर घर बने हुए है तथा मस्जिद, बाय गढ़, हवेलियों तथा ग्राम पंचायत के चारों और वृताकार रूप में घर बने हुए हैं अधिकांश घर सीमेन्ट कंकरिट तथा लोहे के मिश्रण से निर्मित पक्के अधिवास है परन्तु कुछ संख्या में गरिबी रेखा से निचे जीवन यापन करने वाले लोगों की संख्या 115 है जिनके घर कच्ची ईटों से निर्मित है इस गांव में 1 मंजिल से लेकर बहू मंजिल तक इमारते बनी हुई हैं। यहां की हवेलियां, गढ़, छतरियां तथा मन्दिर पुरानी तकनीकों विधियों पर आधारित है जिनकी चित्र शैली ओर विधि शैली अद्भूत है जलवायू का घरों की बनावट तथा प्रकार में विशेष ध्यान रखा गया है। गांव में 20 प्रतिशत पक्के मकान 15 प्रतिशत अर्द्व पक्के मकान तथा 5 प्रतिशत कच्चे अधिवास निर्मित है। तथा डूण्डलोद गांव में कोई भी अधिवास योग्य नहीं स्वीकृत हुआ है यह स्थिति वर्ष 2015–16 में फरवरी माह तक की है।

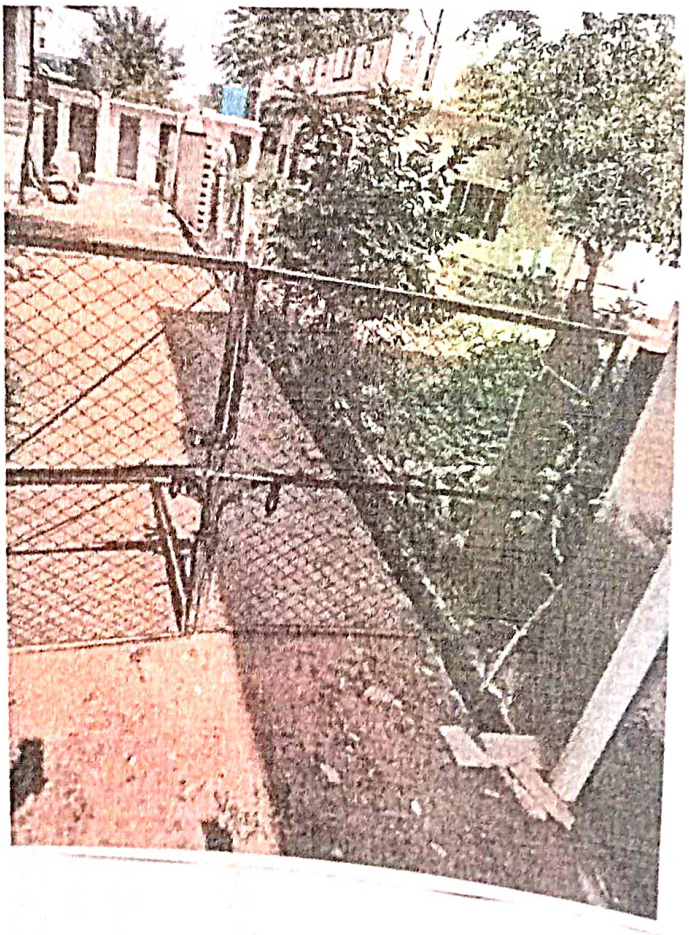

उपरोक्त आरेक्त द्वारा स्पष्ट होता है कि **बाय** ग्राम में एस.सी एस.टी. तथा अन्य की संख्या शून्य है एवं **बाय** गॉव में एस.सी. की संख्या 16 एस.टी. शून्य तथा अन्य की 741 है इस आरेख के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि **बाय** गॉव में सर्वाधिक जनसंख्या पाई जाति है जिसका प्रमुख कारण यहां पर कृषि सुविधाओं एवं चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्धता है तालिका संख्या 4 में ग्राम के कुल परिवारों को दर्शाया गया है:–

तालिका संख्या 4

क्र.सं.	गॉव का नाम	कुल परिवार	B.P.L	A.P.L
1	**बाय**	2160	106	2054
2	**बिरोल**	58	1	57
3	**कोलसिया**	262	8	254
	योग	2480	115	2365

गॉव में कुल परिवारों की संख्या 2480 है जिसमें से B.P.L115 तथा A.P.L की कुल संख्या 2365 है B.P.L परिवार सबसे कम कंवरपुरा ढ़ाणी में है तथा सबसे ज्यादा **बाय** ढ़ाणी में पाये जाते है तथा A.P.Lपरिवार सबसे ज्यादा जिनकी संख्या 2054 है **बाय** ढ़ाणी में स्थित है तथा सबसे कम कंवरपुरा ढ़ाणी में पाये जाते है कुल परिवारों में से B.P.L,A.P.Lबहू दण्ड आरेख द्वारा दर्शाया गया ळें

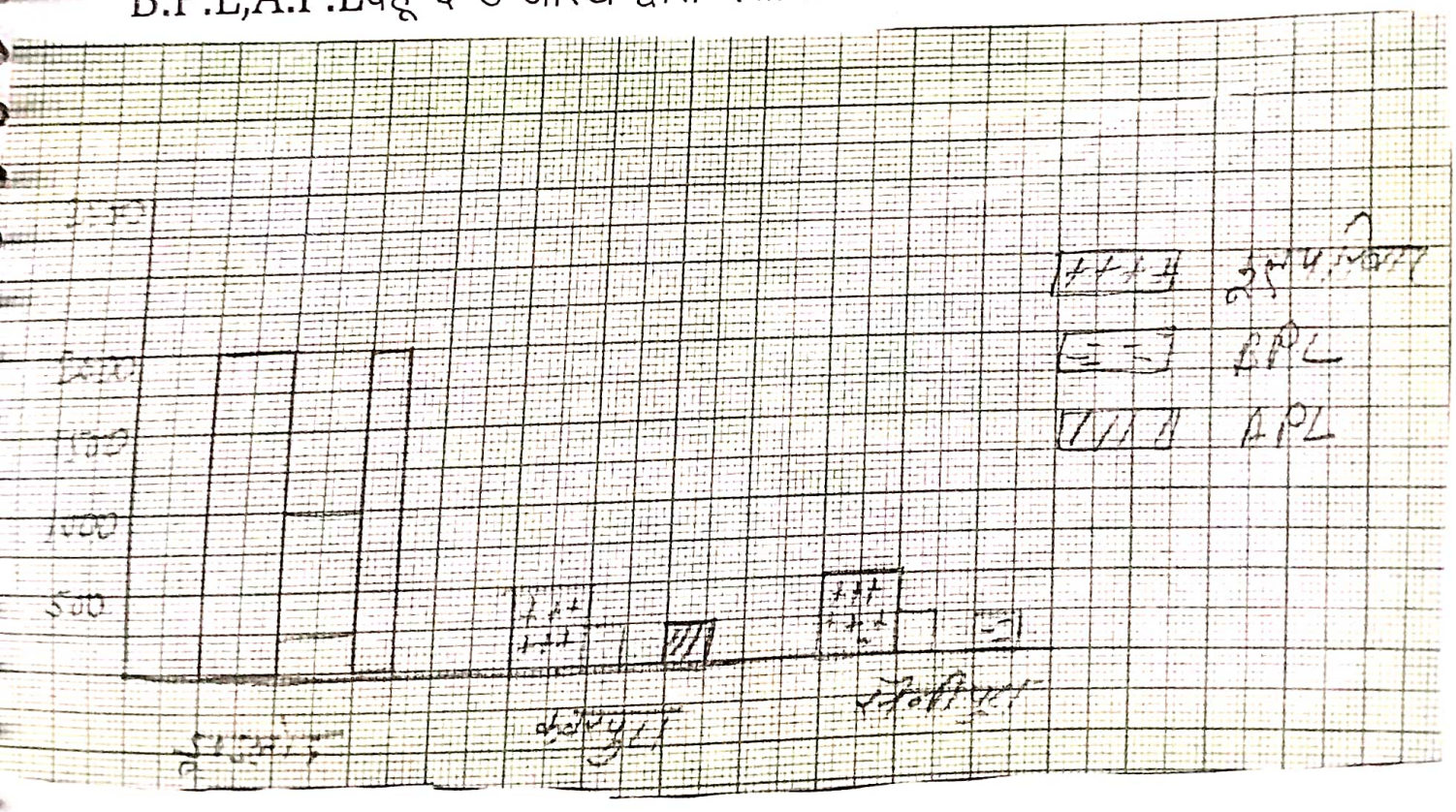

स्वास्थ्य सुविधाएंः–

डूण्डलोद गांव में सरकारी तथा गैर सरकारी स्तर पर कई स्वास्थ्य केन्द्र बने हुए है। रामचन्द्र गोयनका हॉस्पिटल में प्रतिदिन लगभग 70 मरीजों का इलाज डॉ0 भास्कर बी. रावल द्वारा किया जाता है जबकि प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्र में डॉ0 निर्मला देवी द्वारा लगभग 50 मरिजों का इलाज व दवाई वितरित की जाती है। यहां पर टीकाकरण की भी व्यवस्था है। डूण्डलोद गांव में एक प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्र, एक गोयनका निजी स्वास्थ्य केन्द्र स्थित है जहां पर प्रतिदिन मौसमी बिमारीयो का इलाज किया जाता है। डॉ0 भास्कर इस क्षेत्र का प्रमुख चिकित्सक है तथा यहां पर इलाज के लिए आस–पास के लोग आते रहते है इनके द्वारा टि.बी. टाइफाइड व फेफड़ों से सबन्धित रोगों का निदान किया जाता है।

पशुओं के लिए भी एक पशु चिकित्सा केन्द्र स्थापित है गाय, भैंस, ऊंट, बकरी, भेड़ का इलाज इस प्रकार किया जाता है। इस केन्द्र में टिकाकरण कृत्रिम गर्भादान तथा मौसमी बिमारीयो की रोकथाम हेतु इलाज किया जाता हैं। गांव में स्वास्थ्य सुविधाओं की पर्याप्त सुविधाएं है प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की संख्या 1 तथा उपस्वास्थ्य केन्द्र की संख्या 1 एवं होमियोपेथिक चिकित्सालय की संख्या 1 है अैर इसी प्रकार पशू चिकित्सालय 1 है।

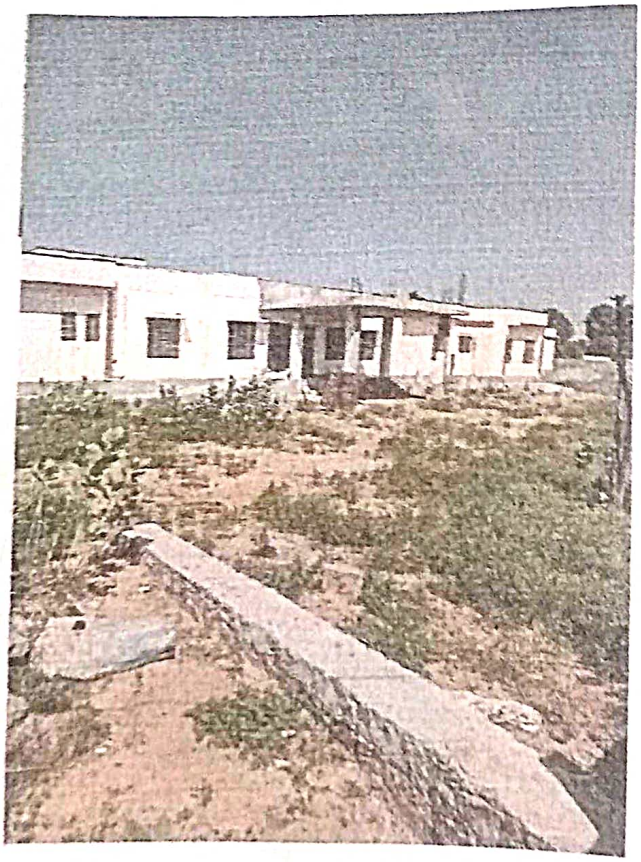

प्राकृतिक वनस्पतिः—

अध्ययन क्षेत्र में प्राकृतिक वनस्पति का विवरण बहुत ही कम है तथा वनस्पति की सघनता कम होने के साथ–साथ यहां पर उष्ण कटिबंधीय गुण वाली वनस्पति पाई जाति है। चूंकि डूण्डलोद अर्द्ध शुष्क जलवायु के अन्तर्गत स्थित होने के कारण इस क्षेत्र में अर्द्ध शुष्क या अर्द्ध मरूस्थलीय वनस्पति पाई जाति है प्राकृतिक वनस्पति के विकास में जलवायु तथा मृदा का महत्वपूर्ण योगदान होता है इस क्षेत्र के अन्तर्गत खेजड़ी बबूल कंटिली झाड़ियां नीम, सीसम, बरगद, शहतूत, नींबू, पपीता, अमरूद, इत्यादि फलों वाले पौधे भी उपलब्ध है। वर्तमान समय में यहां पर बागवानी पौधों के विकास पर ध्यान दिया जा रहा हैं परिणामतः घरों तथा खेतों में बड़े पैमाने पर फलदार पौधें विकसित हो रहे हैं। यहां पतझड़ वृक्ष भी उपलब्ध है जो ग्रीष्म ऋतु आने से पूर्व ही अपने पते गिरा देते है चूंकि अध्ययन क्षेत्र में चारागाह का कोई क्षेत्र चिन्हित नहीं किया गया है।

मिट्टीः—

:—

अध्ययन क्षेत्र की मिट्टी अधिकाशतः बलूई तथा चिकनी मिट्टी है चुंकि मिट्टी का रंग सरंचना बनावट मूल चट्टानों की संरचना पर निर्भर करता है। इस मिट्टी में पौषाक तत्वों की कमी होने पर रासायनिक उर्वरकों के उपयोग द्वारा पूर्ति की जाति है। डूण्डलोद गांव का कुल क्षेत्रफल 1193.98 हैक्टर है जिसमें से कृषि योग्य क्षेत्रफल 705.28 हैक्टर है चूंकि 55 प्रतिशत भू भाग ही कृषि योग्य है। कुल क्षेत्रफल भू भाग का 135.08 सिवायचक तथा 14ण्42 जोहड़ के अन्तर्गत शामिल है। अतः कुल भूमि का 10 प्रतिशत भाग बिना उपयोग के मार्गो तथा जोहड़ के रूप में पड़ा हुआ है। मरूस्थलीकरण की प्रकिया द्वारा अध्ययन क्षेत्र की मृदा अनूपजाऊ होती जा रही है।

सघन कृषि के कारण मृदा में निरंतर पौषक तत्वों में कमी आ रही है। इस कमी को दूर करने के लिए रासयनिक उर्वरको जैविक व गोबर की खाद का

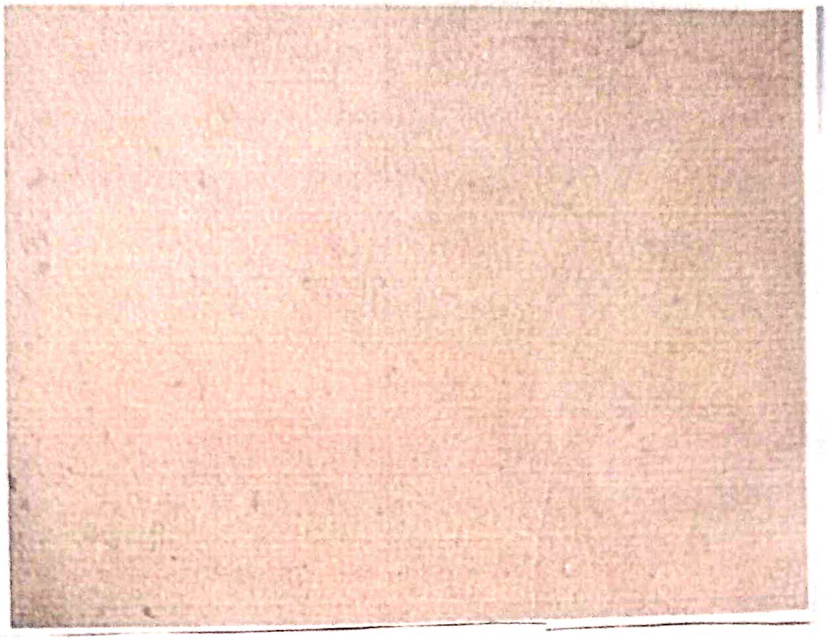

उत्पन्न कराने के काम आता है इस गौशाला में देशी–विदेशी नस्ल की गायें स्थित है। गायों को खाने के लिए मूंगफली, गेहूं तथा जौ का चारा व चूरी पशू आहारों को उपयोग में लाया जाता है। मौषमी बिमारीयों के द्वारा कभी–कभी गायों की मौत हो जाती है तथा पशु चिकित्सों द्वारा समय–समय पर इलाज करवाया जाता है। हरयाणवी नस्ल की पर्याप्त मात्रा में भैंसे उपलब्ध है। घौड़ा प्रजनन केन्द्र में 60 घोड़े है इनको खाने के लिए चना, जौ तथा चारा खिलाया जाता है तथा विभिन्न रोगो के निवारण के लिए समय–समय पर पशु चिकित्सकों द्वारा जांच भी करवायी जाती है। इस अश्व केन्द्र का निर्माण कर्नल राघवेन्द्र सिहं द्वारा करवाया गया था। इन घोड़ों को खाने के लिए हरा चारा तथा शुखि घास एवं कमजोर घोड़ो को गुड, तेल एवं नमक दिया जाता है। इस केन्द्र में मारवाड़ी नस्ल के घोड़े जाते हैं। तथा यहां से विदेशो में (अमेरिका) भेजे जाते है। इन्हें विभिन्न कार्य के लिए उपयोग में लेते है। जैसे नाचने में कोहिनूर व शिवराजल है। धावक में शेरा है। तथा इसकी स्पीड 25 किमी प्रति घंटा है। घोड़ों को बिमारी में पेट दर्द होता है। जिसके कारण इनकी मौत हो जाती है। इनकी दवाईयां फिटोफेन, मेलाफेन व रिमान्टफेल है।

खनिज सम्पदाः–

वर्तमान समय में डूण्डलोद गांव में किसी प्रकार के खनिज का विशेष तौर पर खनन नहीं किया जा रहा है। नई खोजों तथा शोधकार्यो के आधार पर इस क्षेत्र में खनिज उपलब्ध होने की सम्भावनस हैं।

उपयोग तथा अन्य रसायनों का उपयोग किया जा रहा है। वढ़ती हुई आवादी के दवाव से मृदा अनुपजाऊ खारीयकरण तथा कई अन्य समस्याओं से ग्रसित होती जा रही है इस समस्या के समाधान के लिए ग्राम पंचायत स्तर पर मिट्टी की वार–वार जांच व परिक्षण करवाया जाता है कृषकों को मिट्टी की उवर्वरता वनायी रखने के लिए नई–नई तकनिकी व पद्धतियों से अवगत कराया जाता है।

कृषिः–

अध्ययन क्षेत्र में प्रमुख रूप से रबी खरीफ की फसलें उत्पन्न की जाती है तथा गांव के आसपास छोटे पैमाने पर जायदा की फसलें भी विकसित कि जा रही है। रबी की फसल के अन्तर्गत, गेंहू, जौ, सरसों, मैथी, तारामीरा तथा खरीफ की फसल के अन्तर्गत बाजरा, चोला, मुंग व गवार एवं ज्वार तथा जायदा कि फसल के अन्तर्गत तरबूज, खरबूजा, ककड़ी, टिन्डा, भिन्डी इत्यादि विकसीत किये जाते है वर्तमान समय में इन फसलों के उत्पादन बढ़ाने कि लिए आधुनिक तकनिकी तथा पद्वतियों पर आधारित फसले उगायी जाति है रबी की फसल अक्टुवर नवम्वर में बोई जाति है तथा मार्च, अप्रेल, में काट ली जाति है यह फसल पूर्णत सिंचाई पर आधारित है तथा सिचाई का कार्य कुए, नलकुप के द्वारा किया जाता है। खरीफ की फसल जुलाई, अगस्त में बोई जाति है तथा अक्टुबर में काट ली जाति है इस प्रकार की फसल का उत्पादन गॉव के सम्पूर्ण क्षेत्रफल पर किया जाता है। खरीफ की फसल की पैदावार वर्षा पर निर्भर है परन्तु वर्षा समय पर ना होने पर तथा वर्षा की मात्रा कम होने पर फसल को पानी की आपूर्ति सिंचाई के साधनों द्वारा की जाति है जायदा की फसल की बुआई रबी की फसल के पश्चात की जाति है ये फसल पूर्णतः सिंचाई पर आधारित होने के कारण छोटे पैमाने पर विकसीत की जाती है।

गोयनका हवेली का म्यूजियम प्राचिन परम्पराओं तथा वेशभूषा एवं अन्य कलाओं के लिए विचित्र शैली में बना हुआ है यहां श्याम मंदिर, ठाकुर जी का मंदिर, सतीजी माता का मंदिर, हनुमान जी का मंदिर तथा पोलो ग्राउण्ड इत्यादि महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल तथा धार्मिक तिर्थ स्थल है। इन सामारिक स्थलों का भ्रमण करने के लिए हजारों विदेशी सैलानी आते रहते हैं।

शिक्षा का स्तरः–

डूण्डलोद गांव में शिक्षा की दृष्टि से अच्छा वातावरण बना हुआ है प्राचिन काल से ही यहां पर शैक्षणिक दृष्टि से गोयनका सीनीयर सैकण्डरी स्कूल संचालित थी। इसका निर्माण डूण्डलोद के प्रसिद्ध सेठ रामचन्द्र गोयनका द्वारा करवाया गया था। वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप बदल गया है यहां सी.बी.एस.सी से मान्यता प्राप्त 4 स्कूल तथा दो डिग्री कॉलेज एक पोला टेकनिकल कॉलेज, 9 मीडिल स्कूलों, दो आई.टी.आई कॉलेज, 2 बी.एड कॉलेज, 12 प्राईमरी स्कूल निजी क्षेत्र तथा सरकार द्वारा संचालित है इसके अतिरिक्त शेखवाटी क्षेत्र की प्रमुख इंजिनियरिंग कॉलेज भी शामिल है यह क्षेत्र डिग्री , शिक्षा तथा प्रशिक्षण पाठ्यकम उपलब्ध कराने के साथ–साथ तकनीकी शिक्षा में भी अग्रणी बना हुआ है इसी कारण क्षेत्र में आस–पास लोग आकर अध्ययन करते है तथा अध्ययनरत विधार्थियों के लिए उतम गुणों के छात्रावासो की व्यवस्था बनी हुई हैं।

उद्योग धन्धे:-

डुण्डलोद गॉव के वार्ड नम्बर 3 में सर्वेक्षण के आधार पर कोई भी बड़ा उद्योग धन्धा नही था। यह मुस्लिम मोहल्ला होने के कारण छोटी-छाटी चुड़ियों की दुकानें तथा चूड़ियों का कार्य घरों में किया जाता है इन चूड़ियों की कीमत 1000 से 5000 रूपये तक है चुड़ियों लाख द्वारा निर्मित होति है तथा इन पर विभिन्न प्रकार की डिजाइन तथा तरासकर आधुनिक रूप दे दिया जाता है जो सुन्दरता की दृष्टि से अच्छी लगती है इसके साथ-साथ इस्त क्षेत्र में दवाईयों की दुकानें स्थित है। गॉव में एक ऑयल मिल भी स्थित है वह भी वर्तमान समय में बंद की स्थिति में हैं।

पशु सम्पदा:-

डुण्डलोद गॉव पशु सम्पदा की दृष्टि से शेखावाटी में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है, यहां पर उतम नस्ल की गाये, भेड़, बकरी, ऊट, गधे पाये जाते है। डुण्डलोद गांव का अश्व प्रजनन केन्द्र तथा कामधेनू गौशाला अपना विचित्र स्थान लिये हुए है कामधेनु गौशाला की स्थापना वर्ष 2008-09 में बुद्धगिरी ट्रस्ट फतेहपुर द्वारा किया जाता है। यह गौशाला 40 बिघा क्षेत्र में फैली हुई है। इस गौशाला में एक ट्यूबवैल व नलकुप बना हुआ है जा गायो को पानी तथा चारा

प्रमुख मेले व त्यौहार:–

डूण्डलोद गॉव मे विभिन्न धर्मो के लोग निवास करते है तथा लोगो की भिन्न–भिन्न धर्मों मे आस्था होने पर यहां पर कोई प्रकार के मेले, उत्सव समय–समय पर आयोजित किये जाते है श्यामजी का मेला वर्ष 2 बार लगता है तथा गॉव मे प्रतिवर्ष सतावी मा का मेला, गणगौर का मेला आदि लगते है गांव मे विभिन्न धर्मो के लोगो के निवास करने के कारण यहां पर होली, दीपावली, दशहरा, रक्षा बन्धन, तीज तथा ईद, बकरीद, ताजिया आदि त्यौहार समय–समय पर मनाये जाते हैं

प्रमुख तीर्थ व पर्यटन स्थल:–

डूण्डलोद गांव पर्यटन की दृष्टि से शेखावाटी मे महत्वपूर्ण स्थान रखता है इस गांव मे पर्यटन एवं ऐतिहासीक स्मारकों की दृष्टि से विभिन्न हवेलियों तथा डूण्डलोद गढ़ को देखने के लिए विदेशो से बड़ी संख्या मे पर्यटक आते रहते है। डूण्डलोद गांव का गढ़ मुख्य आकर्षण का केन्द्र है जिसके चारो ओर नहर बनी हुई है तथा यह लगभग 8 हैक्टर मे फैला हुआ है इस गढ़ मे विशेष तौर से दिवान खास, सूर्य घड़ी तथा दु–छता महत्वपूर्ण है। दिवान खास मे राजा तथा रानीयां निवास करती थी, तथा दु–छता मे अनेक भिती चित्र तथा रानीयों के राजावट की सामग्री एकत्र है। सूर्य घड़ी अब भी सामान्य घड़ियों की भांती समय का सही निर्धारण कर पाती है। इस गढ़ मे कई फिल्में तथा सीरीयल बनाये गये है। राजा का बाजा, बिनणी वोट देने वाली तथा विदाई इत्यादि फिल्मों की शूटिगं की जा सकी है तथा बकरा सीरीयल भी यही से फिल्माया गया है।

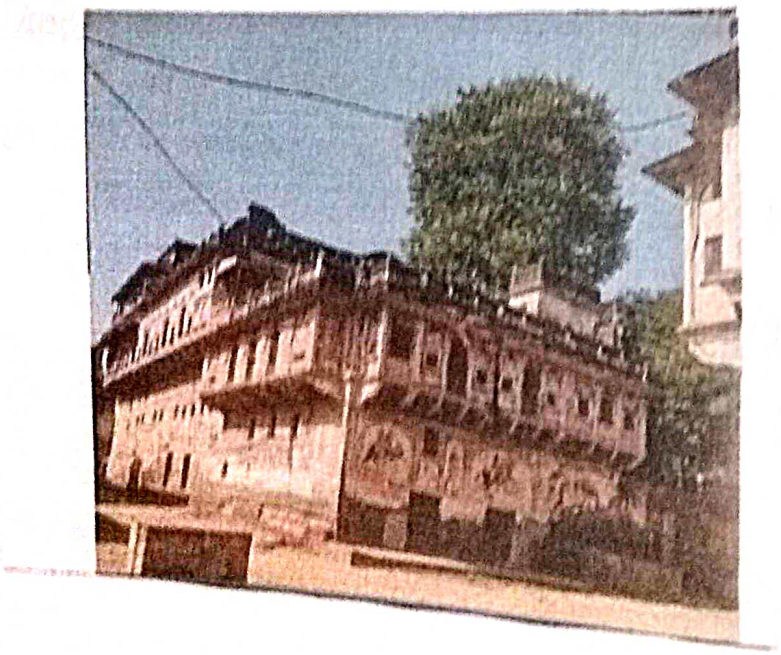

संचार व मनोरंजनके साधनः–

किसी क्षेत्र के विकास का परिचायक संचार एवं मनोरंजन के साधनों पर निर्भर करता है। चूंकि डूण्डलोद गांव में 6 मोबाइल टावर जो विभिन्न कंपनियों से संबंधित है एक पोस्ट ऑफिस तथा 85 प्रतिशत लोगो के घरों में टेलीविजन

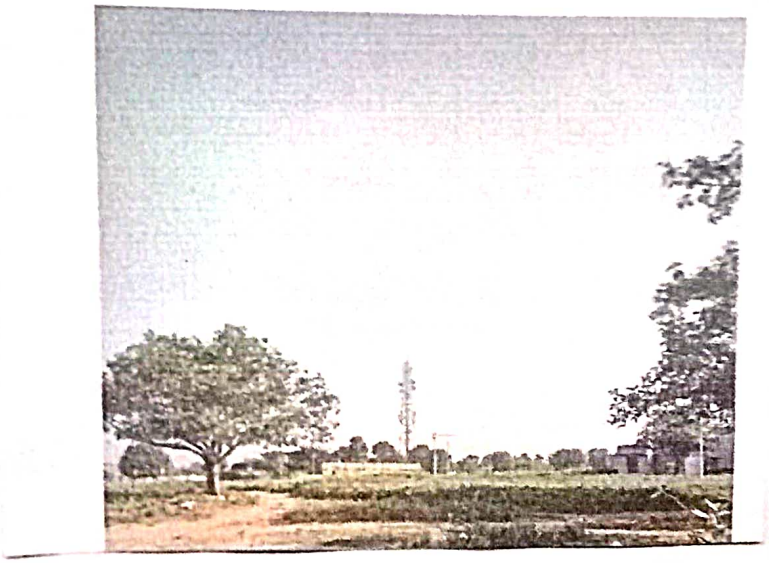

गति के संचार के साधनों में मोबाइल सुविधा उपलब्ध हैं गॉव के मध्य में मुख्य पोस्ट ऑफिस स्थित है जिसके अन्तर्गत रजिस्ट्री, स्पीड पोस्ट, सी.टी.सी. तथा मनीआर्डर की सुविधा उपलब्ध है।

व्यापार व वाणिज्यिः–

गांव की अधिकांश द्वितीयक तृतीयक व्यवसायों में संलगन है। इस गांव में कृषि पशु पालन आदि आधुनिक तकनीकी पर आधारित है। इस क्षेत्र के ग्रामवासी भारत के बड़े–बड़े नगरों में औधोगिक कार्यों से जुड़े हुए है यहां के सेठ, साहुकारो ने गांव का विकास करके गांव में औधोगिक भू दृश्य विकसीत किया है। इस गांव में बैंकिग संचार तथा अन्य आर्थिक कार्यो में लोगों की अच्छी रूची बनी हुई है। यहां के कृषि उत्पादों में जैविक उत्पाद पर विशेष ध्यान दिया गया हैं तथा का पशु पालन (घोड़ो) अंतराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त है।

परिवहन के साधनः–

किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास में परिवहन के साधनों का बहुत बड़ा योगदान है इनके द्वारा आवश्यक माल को मांगने, अतिरिक्त उत्पादन को बाहर भेजने एवं अपने क्षेत्र में नवाचारो के आने का महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित होता है। चूंकि डूण्डलोद गांव सड़क व रेल परिवहन से जुड़ा हुआ है।

जयपुर–लोहारू राज्य राजमार्ग गांव की सीमा को दक्षीण से उत्तर दिशा की ओर स्पर्श करता हुआ गुजरात है जो गांव को अन्य नगरों, कस्बों, जिला मुख्यालयों तथा राजधानी से जोड़ता है। गांव के अन्दर 4 किलोमीटर पक्की सड़क (डामर युक्त), 3 किलोमीटर सीमेंट सड़क तथा 10 किलोमीटर कच्ची सड़क (ग्रेवल रोड़) है जो गांव की गलियों को गांव के चौक से तथा चौक को अन्य पड़ौसी गांवो नगरों, जिलों तथा राजधानियों से जोड़ने का कार्य करती हैं

यातायात के साधनों में यहां बस, ट्रक, जीप, कार, मोटर साईकिल, साईकिल, ऊंटगाड़ी (लगभग 15), बैलगाड़ी (लगभग 13), गधागाड़ी (लगभग 20) तथा घोड़ा गाड़ी (लगभग 5) आदि नये व पूराने तथा पुराने तथा तीव्र व मंदगती वाले यातायात के साधन विकसित है।

1. गंव में बढ़ती हुई जनसंख्या तथा प्रदूषण के अन्य कारको गांव का प्राकृतिक सौन्दर्य व वातावरण पर विकरित प्रभाव पड़ने है।
2. गंव में चारागाहों के अभाव के कारण मरूस्थलीकरण की प्रकिया तेजी से आगे बढ़ रही है।
3. वनों के अत्यधिक दोहन के कारण अध्ययन क्षेत्र की जलवायु तथा पशुओं के लिए चारागाहों पर प्रतिकूल प्रभाव दृष्टिगत हो रहा है।
4. अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि के कारण गांव में गरीवी का स्तर वढ़ने लगा है वी. पी.एल तथा ए.पी.एल परिवारो की संख्या में वृद्धि होने लगी है। गांव में शराव की दुकाने, तम्वाकू व गुटखों की दुकाने जगह–जगह पर वनी हुई है। जिससे ग्रामवासिंयों को धुम्रपान की आदत पड़ गयी है।
5. गांव में नालियों की सफाई समय–समय पर नही के कारण गन्दगी फैलती रहती है जिसके कारण मौसमी विमारियों का प्रकोप वना रहता है
6. डूण्डलोद गांव में पर्यटकों की संख्या प्रतिवर्ष वढ़ती जा रही है जिसके कारण ग्रामवासी देशी विदेशी संस्कृति को अपनाने लगे है। फलतः भारतीय संस्कृति एवं परम्परा अपना अस्तित्व खो रही है।